(6) Dr. Sangita Aher (Hindi)

Impact Factor - 6.261 ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

INTERNATIONAL E-RESEARCH JOURNAL

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February - 2019 Special Issue- 105 (A)

हिंदी साहित्य और सिनेमा

अतिथि संपादक :

डॉ. एस.आर. निंबोरे

प्राचार्य,

कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,

आष्टी, तह. आष्टी, जि. बीड

विशेषांक संपादक :

प्रा. जे.एम. पठाण

हिंदी विभागाध्यक्ष,

कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,

आष्टी, तह. आष्टी, जि. बीड

सहयोगी संपादक :

प्रा. एस.एम. खुडे

कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, आष्टी

प्रा. ए.बी. टाळके

भगवान महाविद्यालय, आष्टी

प्रा. व्ही.बी. गव्हाणे

गांधी महाविद्यालय, कडा

डॉ. जी.बी. मंडलिक

ए.डी. महाविद्यालय, कडा

प्रा. एस.पी. पवार

भगवान महाविद्यालय, आष्टी

मुख्य संपादक :

डॉ. धनराज धनगर

This Journal is indexed in :

- UGC Approved Journal
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

RESEARCH JOURNEY

SWATIDHAN PUBLICATIONS

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 105 (A)- हिंदी साहित्य और सिनेमा
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृ.क्र.
1	सिनेमा और पटकथा लेखन	प्रा. जयनुल्लाखान पठाण	05
2	हिंदी साहित्य ,समाज ओर सिनेमा	डॉ . दत्ता साकोळे	09
3	सिनेमा ओर हिंदी साहित्य	डॉ .चित्रा धामणे	14
4	हिंदी साहित्य ओर सिनेमा	डॉ. सूर्यकांत दळवे	18
5	इक्कीसवी सादी का सिनेमा	प्रा. एस .टी. मुजावर	21
6	हिंदी कथा साहित्य और सिनेमा	आर. के. देशपांडे	24
7	हिंदी साहित्य और सिनेमा	डॉ. विष्णू गव्हाणे	27
8	अपने देश में आपना सिनेमा : शुरुवाती दौर	डॉ. गुलाबराव मंडलिक	30
9	सिनेमा ओर पटकथा लेखन	डॉ. ए. बी . टाळके	34
10	सिनेमा, अभिनय ओर नारी	प्रा. शुभांगी खुंडे	37
11	साहित्य, सिनेमा ओर समाज अंत:संबध	प्रा. पोपट जाधव	40
12	हिंदी सिनेमा ओर पटकथा लेखन	प्रा. अच्युत शिंदे	43
13	प्रेमचंद का साहित्य ओर सिनेमा	डॉ. संगीता आहेर	46
14	साहित्य ओर सिनेमा का संबंध	प्रा. एस. पी पवार	49
15	हिंदी साहित्य ओर सिनेमा	प्रा. जी. बी. जाधव	52
16	सिनेमा साहित्य ओर हिंदी	प्रा. कल्याणी जगताप	54
17	सिनेमा, समाज ओर हिंदी भाषा	डॉ. एस.सी. कारंडे	57
18	हिंदी साहित्य ओर सिनेमा का संबंध	डॉ. अमर वाघमोडे	59
19	हिंदी-मराठी साहित्य और सिनेमा	सीमा पाटील, डॉ.बी.आर.नळे	62
20	हिंदी भाषा ओर सिनेमा का संबंध	माई दोडके	66
21	सिनेमा, साहित्य और हिंदी	प्रा. प्रकाश लहाने	70
22	सिनेमा, साहित्य और हिंदी	डॉ. सुभाष जिते	72

*इस अंक के सभी अधिकार प्रकाशकने आरक्षित किये है। प्रकाशित आलेख पुन:प्रकाशित करने से पहले प्रकाशक एवं लेखक की संयुक्त लिखित अनुमती जरुरी है । प्रकाशित आलेखो में व्यक्त मंतव्य केवल लेखक के है, इन मंतव्य से संपादक और प्रकाशक सहमत हो, यह जरुरी नहीं है । आलेख के संदर्भ में उपस्थित कॉपीराईट **(Originality of the papers)** की जिम्मेवारी स्वयं लेखक की है ।*

- संपादक

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 105 (A)- हिंदी साहित्य और सिनेमा
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

प्रेमचन्द का साहित्य और सिनेमा

डॉ. संगिता एकनाथराव आहेर
महिला महाविद्यालय, गेवराई।
जि.बीड.

साहित्य समाज का दर्पण होता है, क्योंकि साहित्य की ऑखों से हम समाज देखते हैं और समाज की आँखों से साहित्य को देखते हैं। साहित्य की आँखो समाज का हर कोना छान लेती है। साहित्य समाज से रुब–रु होकर हमारे सामने प्रस्तुत होता है। हिन्दी साहित्य अत्यन्त विषाल और समृध्द है। हिन्दी साहित्य का यह व्यापक रुप देखकर हिन्दी पाठक भी गर्वोन्नत महसुस करता है। उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, एकांकी, संस्मररण, रेखाचित्र, यात्रा–साहित्य, रिपोर्ताज, डायरी ऐसी अनेक विधाओं से हिन्दी साहित्य संपन्न है। सौन्दर्य, भाव, कल्पना, प्रतिभा, प्रेरणा और वास्तवता, साहित्य को गरिमा प्रदान करते हैं। मीडिया में भी हिन्दी भाषा एवं साहित्य छाया हुआ हम देखते हैं। फिल्मों में भी हमे हिन्दी भाषा एवं साहित्य का वर्चस्व देखने को मिलता है।

सिनेमा मीडिया का एक सषक्त माध्यम है। सिनेमा केवल मनोरंजन की दुनिया तक ही सीमित नहीं रहा है, बल्कि हर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। ज्ञान–विज्ञान, सामाजिक और राजकीय उथल–पुथल, वैचाारिक क्रांति, ऐतिहासिक एवं पौराणिक कथाएँ आदि अनेक बातों पर सिनेमा बनाया जाता है। हिन्दी सिनेमा स्वस्थ मनोरंजन भी करता है और अनेक प्रष्नों एवं समस्याओं का वैचारिक मंथन भी दर्षकों के सामने रखता है।

साहित्याभिव्यक्ति का सिनेमा एक सषक्त माध्यम है। क्योंकि इसकी पहुँच आम आदमी तक है। भारत में सबसे अधिक फिल्में हिन्दी भाषा में बनाई गई है। परन्तु यह भी कडवा सच है कि हिन्दी में साहित्यिक कृतियों पर सबसे कम सफल फिल्में बनाई गई हैं। भलेही साहित्य और सिनेमा दोनों अलग विधाएँ है, परन्तु इन दोनों का अत्यन्त गहरा रिष्ता है। साहित्य की दृष्यकाव्य और श्रव्य काव्य इन विधाओं की व्यापकता का ही एक रुप सिनेमा है। "चौसठ कलाओं में भी स्थापत्य, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत तथा रंगमंच को विषेष स्थान प्राप्त है। नाट्य को काव्य तथा कला दोनों में समान स्थान प्राप्त है। भरतभूमि नाटक के लिए दृष्य काव्य षब्द का ही प्रयोग करते है। सिनेमा वस्तुतः दृष्य काव्य का ही विकास है।"[1]

साहित्य का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। लगभग 1000 वीं षताब्दी से हिन्दी साहित्य लिखा गया है, तो सिनेमा आधुनिक युग के तकनीकी विकास की देन है। लेकिन मीडिया के इस प्रभावी माध्यम ने समाज को इतना प्रभावित किया कि अत्यन्त कम समय में यह सफल हुआ। असल में सिनेमा की प्रारंभिक यात्रा साहित्य की ही विभिन्न विधाओं से षुरु हुई है। पौराणिक और ऐतिहासिक फिल्में इसीका आधार लेकर बनीं और सफल भी रही है। सिनेमा की परिभाषा करते हुए सत्यजित रे लिखते हैं, "एक फिल्म चित्र है, फिल्म आंदोलन है, फिल्म षब्द है, फिल्म नाटक है, फिल्म एक कहानी है, फिल्म संगीत है, फिल्म हजारों अभिव्यक्ति का श्रव्य तथा दृष्य आख्यान है।"[2]

साहित्य और सिनेमा की परिभाषा को देखने के बाद इन दोनों के गहरे रिष्ते का अनुमान हम कर सकते है। साहित्य की कहानी उपन्यास, नाटक या अन्य किसी विधा पर सिनेमा बनाया जा सकता है। क्योंकि सिनेमा साहित्य का अंग है। हिंदी साहित्य पर अनेकों फिल्में बनीं और सफल भी हुई है। मुगल–ए–आजम, देवदास, गाईड, रजनीगंधा आदि फिल्में युगों बीतने के बाद भी मानस पटल पर अपनी अभिन्न छबि बनाई हुई है।

हिन्दी साहित्य के महान कथाकार मुन्षी प्रेमचंदजी ने हिन्दी साहित्य को गरिमा प्रदान की है और उपन्यास तथा कहानी विधा को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया। हिंदी कथा साहित्य को तिलस्मी कहानियों से यथार्थ और आदर्षवादी जीवन की ओर ले जानेवाले प्रेमचन्द साहित्य जगत में अत्यन्त मषहूर रहे है। प्रेमचन्द की षैली ही उनकी पहचान बनी है जो की पाठक को अत्याधिक पसन्द आयी है। उनकी कहानियों और उपन्यासों को पढ़कर हर वर्ग का पाठक मंत्रमुग्ध हो जाता है। उनके साहित्य का अनुवाद भी विदेषी भाषाओं में हो चुका है।

कहानीकार के रुप में प्रेमचन्द जी ने भारतीय जनजीवन को समस्त आषाओं, आकांक्षाओं और विसंगतियो के साथ अभिव्यक्त किया है। समाज का कोई भी पक्ष उनके साहित्य से अछुता नहीं रहा है। लगभग तीन सौ कहानियाँ और ग्यारह उपन्यासों का रचयिता कथाकार प्रेमचन्द जी का रचना संसार अपने आप में व्यापक और गुणसंपन्न है। सहजता, सरलता, रोचकता, यथार्थता साथ ही भाषाषैली और षिल्प का अनोखा संगम उनके साहित्य में हुआ है। हिन्दी पाठक के लिए यह अत्यन्त गर्व की बात है।

हिन्दी साहित्य का महान और सजग कथाकार अपनी कलम आजमाने के लिए मुंबई पहुँचा। उनकी मजदूर कहानी पर 1934 में फिल्म बनी। परन्तु इसके क्रांतिकारी तेवर के कारण इस पर निर्बंध लगाये गये। इसी समय 'नवजीवन' और 'सेवासदन' फिल्में बनीं। परन्तु यह दोनों फिल्में असफल रही। 1941 में प्रेमचन्द की 'त्रियाचरित्र' इस कहानी पर आधारित 'स्वामी' फिल्म बनी परन्तु यह फिल्म भी असफल रही। 1946 में प्रेमचन्द के राजनीतिक उपन्यास 'रंगभूमि' पर फिल्म बनीं लेकिन दुर्भाग्यवष यह फिल्म भी असफल रही। प्रेमचन्दजी के साहित्यपर अनेक फिल्में बनीं परन्तु असफल रही। जीवन भर जिन्होंने यथार्थवाद और आदर्षवाद को सामने रखकर साहित्य का सृजन किया और हिन्दी साहित्य को गौरव प्रदान किया। दूसरी ओर सिनेमा जगत की मोहमयी दुनिया ने उनकी फिल्मों को नकारा। साहित्य जगत की अत्याधिक सफलता और फिल्मी दुनिया की असफलता के कारण सिनेमा के प्रति प्रेमचन्दजी का मोहभंग हुआ।

सिनेमा के साथ प्रेमचन्दजी का अजीबोगरीब रिष्ता रहा है। प्रेमचन्दजी का साहित्य उच्चकोटि का होने के कारण ही उनके साहित्य पर अनेक फिल्में बनीं परन्तु असफल रही। मूल कहानी के साथ निर्देषक का हस्तक्षेप प्रेमचन्दजी को पसन्द नहीं आया। फिल्मों ने उनके साथ कभी न्याय नहीं किया और प्रेमचन्दजी को भी फिल्मी दुनिया रास नहीं आई। सिनेमा पर अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रेमचन्दजी लिखते है, "साहित्य के भावों की जो उच्चता, भाषा की जो प्रौढ़ता और स्पष्टता, सुन्दरता की जो साधना होती है, वह हमें वहाँ नहीं मिलती। उनका उद्देष्य केवल पैसा कमाना है, सुरुचि या सुन्दरता से उन्हें कोई प्रयोजन नही।"[4] आर्थिक दुरावस्था में साहित्य लेखन करनेवाले प्रेमचन्द ने फिल्म जगत में प्रवेष तो किया परन्तु मानवी मूल्यों की स्थापना करनेवाले लेखक को बाजार मूल्य कभी समझ में नहीं आया।

प्रेमचन्दजी की प्रसिध्द कहानी 'षतरंज के खिलाडी' इस कहानी पर सत्यजीत रे ने इसी नाम से फिल्म बनायी जो सफल भी रही और जिसकी वैष्विक स्तर पर सराहना हुई। इसके बाद 1981 में उनको 'सद्गति' कहानी पर सत्यजित रे ने ही फिल्म बनायी और यह फिल्म भी सफल रही। ये दोनों फिल्में प्रेमचन्दजी के मृत्यू के बाद बनायी गई थी। प्रेमचन्दजी का 'निर्मला' उपन्यास पर दूरदर्षन धारावाहिक के रुप में प्रस्तुतीकरण हुआ था। जो काफी लोकप्रिय रहा था। प्रेमचन्दजी के साहित्य पर समाज की मार्गदर्षक उच्चकोटि की सफल फिल्में बन सकती थी इस बात को हम

नजरअन्दाज नहीं कर सकते हैं। क्योंकि सिनेमा और अर्थव्यवस्था का जहाँ मेल होता है तो अर्थव्यवस्था का स्तर ऊँचा होता है लेकिन साहित्य और अर्थव्यवस्था का मेल बिगड़ता है तो असफलता का सामना करना पड़ता है। इसीलिए हिंदी सिनेमा और हिंदी साहित्य का अंतरसंबंध होते हुए भी दोनों अलग है। वस्तुतः सिनेमा और साहित्य का धरातल अलग–अलग है। क्योंकि सिनेमा में दर्षकों की माँग का ध्यान रखा जाता है जो कि व्यावसायिकता को प्राधान्य देता है। साहित्य में साहित्यकार समाज, यथार्थ और स्वयं की संवेदना और अनुभूति को महत्त्व देता है।

अंततः हम कह सकते है कि हिन्दी साहित्य समृध्द एवं संपन्न है। इस पर अनेकों फिल्में बन सकती है और समाज का यथोचित मार्गदर्षन इससे संभव हो सकता है। गिरते मूल्यों को बचाने के लिए अच्छे उपन्यासों पर सिनेमा का काम होना अत्यन्त आवष्यक है। परन्तु यह एक दूसरे के सहाय्यक के रुप में निष्चित रुप से सफल रुप में सफर तय कर सकते हैं इसमें कोई दुविधा नहीं हैं।

संदर्भ सूची :

1. अनुपम ओझा–भारतीय सिनेमा सिध्दान्त–18
2. डॉ. यू.सी. गुप्ता–इलेक्ट्रॉनिक मीडिया–88
3. Filmivilmi.wordpress.com